वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 62 शुक्रवार 7 अगस्त 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

आईजीएनपी क्षेत्र के क्रॉपिंग पैटर्न एवं जल उपयोग की समीक्षा

आईजीएनपी प्रदेश की महत्वपूर्ण सिंचाई परियोजना: श्रीनिवास

इंदिरा गांधी नहर परियोजना क्षेत्र में जल उत्पादकता बढ़ाने के लिए बनेगी समेकित कार्ययोजना

प्रेशर इरिगेशन, फार्म डिग्गी, पीएम-कुसुम एवं अन्य योजनाओं को एकीकृत कर तैयार होगा मॉडल

जयपुर. शाबाश इंडिया

मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने इंदिरा गांधी नहर परियोजना (आईजीएनपी) क्षेत्र में जल उत्पादकता बढ़ाने तथा किसानों की आय में वृद्धि के लिए समेकित कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रेशर इरिगेशन, फार्म डिग्गी, पीएम-कुसुम, नहरों के आधुनिकीकरण एवं अन्य संबंधित योजनाओं को एकीकृत कर प्रभावी मॉडल विकसित किया जाए। मुख्य सचिव ने कमांड एरिया डेवलपमेंट (सीएडी) विभाग को इसका प्रारूप तैयार करने के निर्देश दिए। मुख्य सचिव गुरुवार को शासन सचिवालय में आईजीएनपी क्षेत्र के क्रॉपिंग पैटर्न एवं जल उपयोग की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। मुख्य सचिव ने कहा कि आईजीएनपी प्रदेश की महत्वपूर्ण एवं महत्वाकांक्षी सिंचाई परियोजना है। इसके लगभग 30 लाख हेक्टेयर कमांड क्षेत्र में से करीब 21 लाख हेक्टेयर क्षेत्र सीधे आईजीएनपी से सिंचित होता है। उन्होंने कहा कि परियोजना का उद्देश्य केवल सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि कृषि उत्पादन बढ़ाते हुए उपलब्ध जल का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करना है। मुख्य सचिव ने सीएडी विभाग को कृषि, जल संसाधन, ऊर्जा तथा अन्य संबंधित विभागों के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों, एटीसी एवं अनुसंधान संस्थानों को इस अभियान से जोड़ा जाए। किसानों के लिए एक्सपोजर विजिट, फील्ड ट्रायल एवं प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किए जाएं, ताकि नई तकनीकों और वैकल्पिक फसल प्रणालियों को तेजी से अपनाया जा सके।

कृषि क्षेत्र को लाभकारी बनाना सरकार की प्राथमिकता

मुख्य सचिव ने कहा कि विकसित राजस्थान-2047 के विजन के अनुरूप कृषि क्षेत्र को अधिक टिकाऊ, लाभकारी एवं जलवायु-अनुकूल बनाना राज्य सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि जल उत्पादकता बढ़ाकर किसानों की आय में वृद्धि सुनिश्चित करना इस कार्ययोजना का प्रमुख उद्देश्य है। सभी संबंधित विभाग समयबद्ध कार्ययोजना के साथ इस महत्वाकांक्षी परियोजना का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करें। उन्होंने अधिकारियों को आईजीएनपी क्षेत्र के लिए व्यापक रिवर बेसिन प्लान तैयार करने के निर्देश दिए। साथ ही क्षेत्रवार फसल पैटर्न का वैज्ञानिक अध्ययन करने को कहा। उन्होंने पर ड्रॉप मोर क्रॉप मिशन के तहत कम पानी में अधिक उत्पादन एवं अधिक आर्थिक लाभ देने वाली खेती को बढ़ावा देने पर बल दिया। भारत सरकार के जल एवं आर्थिक उत्पादकता संबंधी लक्ष्यों को भी कार्ययोजना में शामिल करने के निर्देश दिए।

सौर ऊर्जा आधारित सिंचाई का तेजी से विस्तार किया जाए

मुख्य सचिव ने कहा कि आईजीएनपी के द्वितीय चरण में प्रेशर इरिगेशन एवं सौर ऊर्जा आधारित सिंचाई का तेजी से विस्तार किया जाए। किसानों को फार्म डिग्गियों एवं सोलर सिस्टम से जोड़ने के लिए विशेष अभियान चलाया जाए। इससे जल की बचत होगी, सिंचाई व्यवस्था अधिक प्रभावी बनेगी तथा कृषि उत्पादकता में वृद्धि होगी। उन्होंने कृषि विश्वविद्यालयों को क्षेत्र विशेष के अनुरूप अनुसंधान परियोजनाएं तैयार करने के निर्देश दिए। इसबगोल, क्लस्टर बीन तथा कम पानी में अधिक लाभ देने वाली फसलों की उन्नत किस्मों के विकास एवं प्रसार पर विशेष बल दिया। साथ ही किसानों में जागरूकता बढ़ाने के निर्देश दिए।

9 से 17 अगस्त तक जनभागीदारी से सजेगा 'हर घर तिरंगा' अभियान

'हर घर तिरंगा' अभियान राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति की भावना का सशक्त माध्यम : मुख्य सचिव

प्रदेशभर में तिरंगा थीम पर आयोजित होंगी विविध गतिविधियां

जयपुर. का.सं

मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने कहा कि 'हर घर तिरंगा' अभियान आज देश के सबसे सफल जनभागीदारी अभियानों में से एक बन चुका है। राष्ट्रप्रेम एवं देशभक्ति की भावना को जन-जन तक पहुंचाने में इस अभियान की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। राजस्थान ने इसके प्रभावी क्रियान्वयन में हमेशा अग्रणी भूमिका निभाई है और इस वर्ष भी समन्वित एवं सुनियोजित प्रयासों से प्रदेश को इस अभियान में अग्रणी बनाए रखने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएं जाएं। मुख्य सचिव ने गुरुवार को सचिवालय में एक बैठक लेकर सम्बंधित विभागों एवं जिला कलक्टरों को अभियान की निर्धारित कार्ययोजना का समयबद्ध पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने अभियान के अंतर्गत राज्य के प्रमुख स्मारकों, बांधों, सरकारी भवनों तथा एचआरआरएल रिफाइनरी सहित अन्य प्रमुख इमारतों को आकर्षक तिरंगा रोशनी से सजाने के निर्देश दिए। साथ ही अभियान के दौरान आयोजित सभी गतिविधियों के फोटो एवं अन्य विवरण निर्धारित पोर्टल पर समयबद्ध रूप से अपलोड कर नियमित मॉनिटरिंग सुनिश्चित करने को कहा।

नसीराबाद में झूलेलाल चालीहा महोत्सव की धूम, रोजाना हो रहे भजन-कीर्तन व सत्संग

नसीराबाद (रोहित जैन)

पूज्य सिंधी पंचायत एवं बहराणा मंडली के तत्वावधान में नसीराबाद शहर में झूलेलाल चालीहा महोत्सव बड़े ही श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। मुखी काली बाबानी ने बताया कि 16 जुलाई से प्रारंभ हुआ यह महोत्सव 24 अगस्त तक चलेगा। प्रतिदिन प्रातः 6:30 बजे से 7:00 बजे तक झूलेलाल मंदिर में भजन-कीर्तन एवं आरती का आयोजन किया जाता है, जिसमें नगर के सभी वर्गों के श्रद्धालु बड़ी संख्या में भाग लेकर धर्मलाभ अर्जित कर रहे हैं। इसी क्रम में प्रतिदिन रात्रि 9:30 बजे से 10:30 बजे तक नगर के विभिन्न समाजबंधुओं के घरों पर भजन-कीर्तन, सत्संग, नृत्य, आरती एवं प्रसाद वितरण का आयोजन किया जा रहा है। इन आयोजनों में महिला, पुरुष, बच्चे एवं बुजुर्ग बड़ी संख्या में सहभागिता कर रहे हैं। मुखी बाबानी ने बताया कि झूलेलाल भगवान के भजनों पर

श्रद्धालु नृत्य और कीर्तन करते हुए भक्ति में लीन होकर आध्यात्मिक आनंद का अनुभव कर रहे हैं। पूरे समाज में इन दिनों भक्तिमय वातावरण बना हुआ है। उन्होंने बताया कि इस महोत्सव को सफल बनाने में हरीश साधवानी, योगेश मनसुखानी, बबलू लालवानी, किशोर कंवरचांदानी, कालू खेराजानी, दीपू खटवानी, दिलीप साधवानी, लाल बाबानी, सोनू खेराजानी, गंगाराम छतवानी, भगवान (पिंकू) प्रताप राय, हरीश कृपलानी, साजन नागरानी, रोहित खेराजानी, मोनू बाबानी, निशा खेराजानी, कविता बाबानी, सीमा लालवानी, गोपी तेजवानी, मीना लोंगवानी, देवी बाबानी, पूनम भगनानी, रेखा फुलवानी, मीनू तेजवानी, कविता टहलवानी, माही टहलवानी, पूनम लहरवानी, नेहा भगनानी, नानक टहलवानी, कालू भाई तेजवानी, रमेश लहरवानी, किशोर चेलानी, प्रदीप बुलचंदानी, हरि सिंह टहलवानी, रूपा बाबानी, गोप बाबानी, ओमप्रकाश लालवानी, राजू संगतानी, सोनी पैप्सी, दिलीप, अशोक लोंगवानी, टिंकू निहलानी तथा राजेश लहरवानी सहित अनेक समाजजन प्रतिदिन अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

महावीर पब्लिक स्कूल के योगासन खिलाड़ियों का सीबीएसई वेस्ट ज़ोन प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन

जयपुर. शाबाश इंडिया

जयपुर। सी-स्कीम स्थित महावीर पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों ने सीबीएसई वेस्ट ज़ोन योगासन प्रतियोगिता-2026 में शानदार प्रदर्शन करते हुए विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया। यह प्रतियोगिता 30 जुलाई से 5 अगस्त 2026 तक मास्टरमाइंड कॉन्वेंट स्कूल, सारंगपुर (मध्य प्रदेश) में आयोजित हुई ।प्रतियोगिता में विद्यालय की अंडर-14 एवं अंडर-19 टीमों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए तृतीय स्थान प्राप्त किया। दोनों वर्गों में खिलाड़ियों ने कुल 10 कांस्य पदक अपने नाम किए ।व्यक्तिगत एवं युगल स्पर्धाओं में भी विद्यार्थियों ने उल्लेखनीय सफलता अर्जित की। अंडर-14 आर्टिस्टिक पेयर स्पर्धा में देवांश टेकवाल (कक्षा VIII-C) एवं प्रथम सारस्वत (कक्षा VII-A) ने रजत पदक जीता। अंडर-14 आर्टिस्टिक सिंगल स्पर्धा में ऋत्विक जैन (कक्षा VII-C) ने कांस्य पदक, जबकि अंडर-14 ट्रेडिशनल सिंगल स्पर्धा में प्रथम सारस्वत ने रजत पदक प्राप्त किया ।इसी प्रकार अंडर-19 रिदमिक पेयर स्पर्धा में गर्वित गुप्ता (कक्षा X-A) एवं प्रणव गौर (कक्षा IX-B) ने रजत पदक हासिल किया, जबकि अंडर-19 ट्रेडिशनल सिंगल स्पर्धा में प्रणव गौर ने कांस्य पदक अपने नाम किया ।विद्यालय के लिए यह अत्यंत गर्व का विषय है कि गर्वित गुप्ता, प्रणव गौर, देवांश टेकवाल, प्रथम सारस्वत एवं ऋत्विक जैन का चयन सीबीएसई वेस्ट ज़ोन का प्रतिनिधित्व करते हुए राष्ट्रीय योगासन चैंपियनशिप के लिए हुआ है ।संस्था के पदाधिकारियों, सदस्यों एवं प्राचार्या श्रीमती सीमा जैन ने सभी विजेता विद्यार्थियों, प्रशिक्षकों तथा अभिभावकों को इस शानदार उपलब्धि पर हार्दिक बधाई देते हुए राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएँ दीं। विद्यालय परिवार ने विश्वास व्यक्त किया कि ये प्रतिभाशाली विद्यार्थी राष्ट्रीय स्तर पर भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय एवं प्रदेश का नाम रोशन करेंगे।

राजनीति

शिव-उपासना और लोककल्याण का पावन पर्व

भारतीय कालगणना में प्रत्येक मास का अपना विशिष्ट धार्मिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक महत्व है, किंतु श्रावण मास इन सबमें अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। सामान्यतः इसे भगवान शिव की आराधना का मास माना जाता है, परंतु शास्त्रीय दृष्टि से इसका स्वरूप इससे कहीं अधिक व्यापक और गंभीर है। श्रावण नाम का आधार श्रवण नक्षत्र है, और वैदिक ज्योतिष में श्रवण नक्षत्र के अधिदेवता स्वयं भगवान विष्णु माने गए हैं। श्रवण का अर्थ केवल नक्षत्र नहीं, अपितु श्रवणम्-ज्ञान का ग्रहण, सत्य का अनुशीलन और धर्म को आत्मसात करना भी है। अतः श्रावण मास वस्तुतः ज्ञान, धर्म, पालन और कल्याण इन सभी का समन्वित पर्व है। श्रावण में श्रवण भजन व्रत उपासना विशेष फलप्रद मना देते है। इसी कारण श्रावण मास के आरंभिक चरण में चातुर्मास्य का शुभारंभ होता है। देवशयनी एकादशी से भगवान विष्णु योगनिद्रा में प्रविष्ट होते हैं और आगामी चार मास तप, स्वाध्याय, व्रत, संयम तथा आध्यात्मिक साधना के लिए विशेष रूप से निर्धारित किए गए हैं। भारतीय मनीषा ने वर्षा ऋतु को बाह्य गतिशीलता से अधिक आंतरिक जागरण का समय माना है। यही कारण है कि इस अवधि में ऋषि-मुनि एक स्थान पर निवास कर अध्ययन, अध्यापन और धर्मचर्चा में प्रवृत्त होते थे। यद्यपि श्रवण नक्षत्र के अधिदेवता भगवान विष्णु हैं, तथापि इस मास में भगवान शिव की उपासना का विशेष विधान है। समुद्रमंथन के समय लोकमंगलार्थ हलाहल विष का पान कर शिव ने संपूर्ण सृष्टि की रक्षा की। अतः श्रावण में किया जाने वाला जलाभिषेक केवल पूजा नहीं, बल्कि लोककल्याण, आत्मशुद्धि और अंतःकरण की शीतलता का प्रतीक है। वैदिक श्रीरुद्रम् का यह उद्घोष है, जो शिव को समस्त मंगल एवं कल्याण के अधिष्ठाता के रूप में प्रतिष्ठित करता है। श्रावण मास का प्रत्येक पर्व भारतीय संस्कृति के किसी शाश्वत मूल्य का प्रतिनिधित्व करता है। नागपंचमी प्रकृति, जैव-विविधता और समस्त प्राणिजगत के प्रति कृतज्ञता का पर्व है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी भी श्रावण या भाद्रपद मास का पर्व है। यह धर्मसंस्थापन, कर्मयोग और दिव्य अवतार की स्मृति का महोत्सव है, जिसकी घोषणा स्वयं श्रीकृष्ण करते हैं। श्रावण पूर्णिमा का विशेष महत्व है। इसी दिन श्रावणी (उपाकर्म) संपन्न होती है। वेदाध्ययन करने वाले द्विज नवीन यज्ञोपवीत धारण कर ऋषियों का स्मरण करते हुए पुनः स्वाध्याय का संकल्प लेते हैं।

संपादकीय

आंतरिक संकट की गहराई में पाकिस्तान

पाकिस्तान आज कई मोर्चों पर एक साथ जूझ रहा है। आर्थिक संकट, राजनीतिक अस्थिरता और सुरक्षा चुनौतियां देश को अंदर से कमजोर कर रही हैं। विशेष रूप से पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) और बलूचिस्तान में जन-असंतोष और हिंसा चरम पर है। ये दोनों क्षेत्र पाकिस्तान की कमजोरियों को उजागर कर रहे हैं। आर्थिक मोर्चे पर स्थिति चिंताजनक है। देश आईएमएफ के कार्यक्रमों पर निर्भर है। गरीबी दर लगभग 29 प्रतिशत तक पहुंच गई है। महंगाई दो अंकों में बनी हुई है। व्यापार घाटा बढ़ा है और विदेशी मुद्रा भंडार दबाव में हैं। विकास दर अनुमानित 3.7 प्रतिशत के आसपास है, जो बढ़ती आबादी के लिए पर्याप्त नहीं। मध्य पूर्व में तनाव के कारण ऊर्जा कीमतों में उछाल ने स्थिति और बिगाड़ी है। परिवहन क्षेत्र में हड़ताल की धमकियां और बाढ़ जैसी आपदाएं आम लोगों की मुश्किलें बढ़ा रही हैं। राजनीतिक रूप से सेना की भूमिका प्रमुख बनी हुई है। फील्ड मार्शल आसिम मुनीर के नेतृत्व में सैन्य स्थापना का दबदबा है। इमरान खान जेल में हैं और उनके समर्थक रिहाई के लिए सड़कों पर उतर रहे हैं। गठबंधन सरकार में तनाव दिख रहा है। विपक्षी नेताओं पर मुकदमे और सजाएं जारी हैं। पीओके में पिछले कुछ महीनों से व्यापक विरोध प्रदर्शन चल रहे हैं। जॉइंट अवामी एक्शन कमिटी (जेएएसी) के नेतृत्व में लोग शासन सुधार, आरक्षित सीटों को समाप्त करने और बेहतर सुविधाओं की मांग कर रहे हैं। जून से

लेकर जुलाई तक विरोध में दर्जनों नागरिक मारे गए। कुछ रिपोर्ट्स के अनुसार जून से अब तक 90 के करीब नागरिकों की मौत हुई। इंटरनेट ब्लैकआउट, खाद्य आपूर्ति में रुकावट और भारी पुलिस बल की तैनाती हुई। जेएएसी को आतंकवाद विरोधी कानून के तहत प्रतिबंधित कर दिया गया। चुनावों को फर्जी करार देते हुए भारत ने भी इस दमन की निंदा की। स्थानीय लोग शिकायत कर रहे हैं कि क्षेत्र को आजाद बताने के बावजूद वास्तविक नियंत्रण और संसाधनों का दोहन इस्लामाबाद द्वारा किया जाता है। बिजली, रोजगार और विकास की कमी ने असंतोष को भड़काया है। चुनाव प्रक्रिया के दौरान भी हिंसा और विरोध जारी रहे। यह स्थिति पाकिस्तान की कश्मीर नीति की विफलता को उजागर करती है। बलूचिस्तान सबसे अधिक हिंसा वाला क्षेत्र बना हुआ है। बलूच लिबरेशन आर्मी (बीएलए) जैसे समूह सुरक्षा बलों, बुनियादी ढांचे और चीनी परियोजनाओं पर हमले कर रहे हैं। जुलाई में कई हमलों में दर्जनों सुरक्षा कर्मी मारे गए। एक सप्ताह में 25 हमलों में 100 से अधिक मौतें दर्ज हुईं। प्रांत में लागू लापता व्यक्तियों के मामले हजारों में बताए जाते हैं। मानवाधिकार समूह जबरन गायब करने और न्यायेतर हत्याओं की शिकायत करते हैं। महरंग बलूच जैसी कार्यकर्ताओं को आतंकवाद के आरोप में सजा दी गई, जिससे विरोध और बढ़ा। सीपीईसी परियोजनाओं और खनिज संसाधनों के दोहन को लेकर स्थानीय आक्रोश है। सुरक्षा अभियानों के बावजूद विद्रोह का दायरा बढ़ रहा है। राज्य की पकड़ कमजोर पड़ती दिख रही है। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

हाथों की कला, आत्मनिर्भर भारत की पहचान

सुरेश सिंह बैस

भारत की सांस्कृतिक विरासत जितनी समृद्ध है, उतनी ही गौरवशाली उसकी हस्तकला और हथकरघा परंपरा भी है। भारतीय हथकरघा केवल वस्त्र निर्माण की तकनीक नहीं, बल्कि हमारी सभ्यता, संस्कृति, लोकजीवन और आत्मनिर्भरता का जीवंत प्रतीक है। इसी अमूल्य विरासत के सम्मान और संरक्षण के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस मनाया जाता है। इस दिवस का विशेष महत्व इसलिए भी है क्योंकि 7 अगस्त 1905 को स्वदेशी आंदोलन का आरंभ हुआ था। विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार और स्वदेशी उत्पादों को अपनाने का जो संकल्प उस समय लिया गया, वही आगे चलकर देश की आर्थिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की मजबूत नींव बना। इसी ऐतिहासिक स्मृति को सम्मान देते हुए भारत सरकार ने वर्ष 2015 से 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के रूप में मनाने की शुरूआत की। भारतीय हथकरघा उद्योग हजारों वर्षों से हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। काशी की बनारसी साड़ियाँ, चंदेरी, महेश्वरी, कांजीवरम, पटोला, पोचमपल्ली, भागलपुरी सिल्क और असम का मूगा रेशम आज विश्वभर में भारतीय शिल्प कौशल की पहचान हैं। इन वस्त्रों में केवल धागे नहीं बुने जाते, बल्कि पीढ़ियों का अनुभव, कलाकारों का श्रम और भारतीय संस्कृति की आत्मा भी समाहित होती है। हथकरघा उद्योग भारत के सबसे बड़े कुटीर उद्योगों में से एक है। लाखों बुनकर और उनके परिवार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इसी पर निर्भर हैं। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों और महिलाओं के लिए यह उद्योग रोजगार, सम्मान और आत्मनिर्भरता का महत्वपूर्ण आधार है। सीमित संसाधनों में भी हमारे बुनकर अपने कौशल से ऐसे उत्कृष्ट वस्त्र तैयार करते हैं, जिनकी सुंदरता और गुणवत्ता मशीन निर्मित कपड़ों से अलग पहचान रखती है। आज जब मशीनों से बड़े पैमाने पर वस्त्रों का उत्पादन हो रहा है, तब हथकरघा उद्योग अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। बढ़ती लागत, आधुनिक विपणन की कमी, युवाओं का इस व्यवसाय से विमुख होना तथा सस्ते मशीन निर्मित कपड़ों की प्रतिस्पर्धा ने पारंपरिक बुनकरों के सामने आर्थिक संकट खड़ा कर दिया है। यदि समय रहते इन्हें तकनीकी सहयोग, बाजार और उचित मूल्य नहीं मिला, तो अनेक पारंपरिक बुनाई शैलियाँ विलुप्त होने का खतरा झेल सकती हैं। हथकरघा केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण का भी माध्यम है। हाथ से बनने वाले वस्त्रों में ऊर्जा की खपत अपेक्षाकृत कम होती है और उनका कार्बन उत्सर्जन भी कम होता है। इसलिए आज जब पूरी दुनिया टिकाऊ विकास और पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली की ओर बढ़ रही है, तब भारतीय हथकरघा उद्योग का महत्व और भी बढ़ जाता है। छत्तीसगढ़ भी अपनी समृद्ध हथकरघा परंपरा के लिए जाना जाता है। यहाँ के कोसा रेशम, पारंपरिक बुनाई और स्थानीय शिल्प देश-विदेश में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं। यदि इन उत्पादों को आधुनिक डिजाइन, डिजिटल विपणन और राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय बाजार उपलब्ध कराया जाए, तो यह राज्य की अर्थव्यवस्था और स्थानीय कारीगरों के जीवन में बड़ा परिवर्तन ला सकता है। राष्ट्रीय हथकरघा दिवस केवल उत्सव का अवसर नहीं है, बल्कि यह हमारे लिए आत्मचिंतन का भी दिन है। हमें यह समझना होगा कि जब हम एक हथकरघा उत्पाद खरीदते हैं, तब हम केवल एक वस्त्र नहीं खरीदते, बल्कि किसी बुनकर के परिवार की आजीविका, उसकी कला और उसकी पीढ़ियों से चली आ रही परंपरा को भी सशक्त बनाते हैं।

राज्य स्तरीय अंगदान जागरूकता कार्यक्रम में जेएलएन मेडिकल कॉलेज, अजमेर को मिला 'सर्वश्रेष्ठ NTORC सेंटर' पुरस्कार

अजमेर (रोहित जैन)

राज्य स्तरीय अंगदान जागरूकता कार्यक्रम के अवसर पर एसएमएस मेडिकल कॉलेज, जयपुर के न्यू एकेडमिक ब्लॉक ऑडिटोरियम में आयोजित भव्य समारोह में जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज (जेएलएन), अजमेर को अंगदान के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य एवं उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए 'सर्वश्रेष्ठ NTORC सेंटर' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।यह प्रतिष्ठित सम्मान चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर, प्रमुख शासन सचिव (चिकित्सा शिक्षा) श्रीमती गायत्री राठौड़, आयुक्त, चिकित्सा शिक्षा बाबूलाल गोयल, SOTTO राजस्थान की राज्य नोडल अधिकारी डॉ. चित्रा, अंगदान समन्वयक डॉ. रश्मि गुप्ता तथा एसएमएस मेडिकल कॉलेज, जयपुर के प्राचार्य एवं नियंत्रक द्वारा प्रदान किया गया।जेएलएन मेडिकल कॉलेज, अजमेर की ओर से यह पुरस्कार प्राचार्य एवं नियंत्रक डॉ. अनिल सामरिया, NTORC नोडल अधिकारी डॉ. गोगराज गरवाल, डॉ. दिलीप नागरवाल, डॉ. कुलदीप, डॉ. प्रदीप, नर्सिंग अधिकारी घनश्याम तथा ऑपरेशन थियेटर (ओटी) टीम ने प्राप्त किया।यह सम्मान जेएलएन मेडिकल कॉलेज की NTORC टीम द्वारा अंगदान जागरूकता, ब्रेन स्टेम डेथ की पहचान, अंगदान समन्वय तथा अंग एवं ऊतक प्रत्यारोपण सेवाओं को सुदृढ़ बनाने की दिशा में किए गए उत्कृष्ट कार्यों की राज्य स्तर पर मिली सराहना का प्रतीक है।कार्यक्रम के दौरान अंगदान के माध्यम से अनेक लोगों को नया जीवन देने वाले स्वर्गीय दुर्गाशंकर जी के परिवार का भी विशेष सम्मान किया गया। इस अवसर पर उनके पूज्य माता-पिता, भाइयों एवं बहनों को मंच पर सम्मानित किया गया। अतिथियों ने परिवार के इस प्रेरणादायी एवं मानवीय निर्णय की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे परिवार समाज के लिए प्रेरणा स्रोत हैं तथा उनके अंगदान के संकल्प से अनेक जरूरतमंद लोगों के जीवन में नई आशा का संचार हुआ है।इस अवसर पर डॉ. अनिल सामरिया ने कहा कि यह सम्मान संस्थान के सभी चिकित्सकों, ट्रांसप्लांट कोऑर्डिनेटर्स, नर्सिंग अधिकारियों, पैरामेडिकल कर्मियों एवं सहयोगी कर्मचारियों के सामूहिक समर्पण, उत्कृष्ट टीमवर्क और निरंतर प्रयासों का परिणाम है। उन्होंने कहा कि जेएलएन मेडिकल कॉलेज, अजमेर भविष्य में भी अंगदान के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाने तथा अधिक से अधिक लोगों को जीवनदान दिलाने के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करता रहेगा। कॉलेज परिवार ने इस गौरवपूर्ण उपलब्धि पर NTORC टीम के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए प्रदेशवासियों से अधिक से अधिक संख्या में अंगदान का संकल्प लेने का आह्वान किया। अंगदान महादान है। एक व्यक्ति का अंगदान अनेक लोगों को नया जीवन प्रदान कर सकता है। आइए, अंगदान का संकल्प लेकर मानवता की इस महान सेवा में सहभागी बनें।

परमात्मा बनना है तो पहले परमात्मा को पहचानना होगा : आचार्य उदारसागर महाराज

9 अगस्त को होगी मंगल कलश स्थापना, पत्रिका का विमोचन

मुरैना (मनोज जैन नायक)। श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन पंचायती बड़ा मंदिर में वर्षायोग हेतु विराजमान जैनाचार्य अभिनंदन सागरजी महाराज के परम प्रभावक आज्ञानुवर्ती शिष्य आचार्य श्री 108 उदारसागरजी महाराज ने प्रवचन में कहा कि यदि जीवन का लक्ष्य परमात्मा पद की प्राप्ति है, तो सबसे पहले परमात्मा के वास्तविक स्वरूप और गुणों को पहचानना आवश्यक है। केवल दर्शन या पूजा पर्याप्त नहीं, बल्कि वीतरागता, तप, त्याग, करुणा और समता जैसे गुणों को जीवन में उतारना ही सच्ची आराधना है। उन्होंने कहा कि भगवान से कुछ माँगना भक्ति नहीं, बल्कि उनके समान बनने का संकल्प ही वास्तविक भक्ति है। आचार्यश्री ने हाथी खरीदने वाले ग्राहक का उदाहरण देते हुए कहा कि जैसे किसी वस्तु को ग्रहण करने से पहले उसकी सही पहचान आवश्यक होती है, उसी प्रकार परमात्मा बनने की आकांक्षा रखने वाले व्यक्ति के लिए परमात्मा के स्वरूप और आदर्शों को समझना अनिवार्य है। इस अवसर पर मुनिश्री 108 उपशान्त सागर महाराज ने कहा कि जिनालय सदैव आध्यात्मिक ऊर्जा के केंद्र रहे हैं। आज चमत्कार कम दिखाई देने का कारण मंदिरों की शक्ति में कमी नहीं, बल्कि श्रद्धा, भक्ति और समर्पण भाव का क्षीण होना है। उन्होंने कहा कि निष्कपट श्रद्धा और अटूट विश्वास से ही आत्मजागरण एवं आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है। कार्यक्रम के दौरान 9 अगस्त को होने वाली मंगल कलश स्थापना की जानकारी दी गई तथा स्मारिका/पत्रिका का विमोचन किया गया।

महिला स्वावलंबन की दिशा में ऐतिहासिक पहल

स्वास्तिक एग्जीबिशन को मिला राजस्थान जैन युवा महासभा का सहयोग

13-14 अगस्त को भाटिया भवन में लगेगी महिलाओं द्वारा निर्मित उत्पादों की भव्य प्रदर्शनी

जयपुर. शाबाश इंडिया

महिला सशक्तिकरण एवं स्वावलंबन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से टोंक फाटक स्थित मधुबन कॉलोनी के श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के आचार्य शांतिसागर सभागार में महिलाओं द्वारा कुटीर एवं गृह उद्योगों के माध्यम से निर्मित घरेलू उत्पादों की दो दिवसीय स्वास्तिक एग्जीबिशन आयोजित की गई। प्रदर्शनी में बड़ी संख्या में महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान जैन युवा महासभा के प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप जैन लाला एवं प्रदेश महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा उपस्थित रहे। आयोजक समूह की श्रीमती मीनाक्षी जैन सोगानी एवं जिनेश जैन ने अतिथियों का तिलक, माला एवं दुपट्टा पहनाकर स्वागत एवं सम्मान किया। आयोजकों ने बताया कि 13 एवं 14 अगस्त को भाटिया भवन, राजा पार्क, जयपुर में राजस्थान जैन युवा महासभा के सहयोग से स्वास्तिक एग्जीबिशन का भव्य आयोजन किया जाएगा। प्रदर्शनी का उद्देश्य महिलाओं को ऐसा सशक्त मंच उपलब्ध कराना है, जहां वे अपने उत्पादों एवं सेवाओं का प्रदर्शन कर अपने व्यवसाय को नई पहचान दिला सकें तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें। उन्होंने बताया कि इस आयोजन के प्राउड स्पॉन्सर 'मिस्टर रवि चाय, जयपुर' होंगे, जिनके सहयोग से महिला सशक्तिकरण के इस अभियान को और मजबूती मिलेगी। इस अवसर पर प्रदीप जैन लाला एवं विनोद जैन कोटखावदा ने इस अभिनव पहल की सराहना करते हुए कहा कि ऐसी प्रदर्शनियां महिला उद्यमिता, स्वरोजगार एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता को नई दिशा प्रदान करेंगी। उन्होंने समाजबंधुओं से 13 एवं 14 अगस्त को अधिक से अधिक संख्या में प्रदर्शनी में पहुंचकर महिलाओं द्वारा निर्मित उत्पादों की खरीदारी करने तथा महिला स्वावलंबन को प्रोत्साहन देने का आह्वान किया। कार्यक्रम में संगिनी फोरम, जेएसजी मेट्रो की निवर्तमान अध्यक्ष अम्बिका सेठी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। अंत में मीनाक्षी जैन सोगानी ने सभी अतिथियों एवं उपस्थितजनों का आभार व्यक्त किया।

> आयोजकों ने बताया कि 13 एवं 14 अगस्त को भाटिया भवन, राजा पार्क, जयपुर में राजस्थान जैन युवा महासभा के सहयोग से स्वास्तिक एग्जीबिशन का भव्य आयोजन किया जाएगा। प्रदर्शनी का उद्देश्य महिलाओं को ऐसा सशक्त मंच उपलब्ध कराना है, जहां वे अपने उत्पादों एवं सेवाओं का प्रदर्शन कर अपने व्यवसाय को नई पहचान दिला सकें तथा आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें।

प्रकृति ने सभी जीवों को जीने का अधिकार दिया है, पेड़-पौधे भी जीना चाहते हैं : राष्ट्रसंत मुनि पुंगव श्री सुधासागर महाराज

आचार्य विद्यासागर महाराज की महापूजा सम्पन्न, 'सुधा का सागर' पुस्तक पर 9 अगस्त को होगी लिखित परीक्षा

इंदौर. शाबाश इंडिया

दलाल बाग में आयोजित विशाल धर्मसभा में राष्ट्रसंत, राजकीय अतिथि मुनि पुंगव श्री सुधासागर महाराज ने कहा कि प्रकृति ने पेड़-पौधों सहित सभी जीवों को जीने का अधिकार दिया है। विज्ञान भी अब यह स्वीकार करने लगा है कि पेड़-पौधों में भी जीवन होता है और वे भी जीना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य को मिली यह अमूल्य जिंदगी सर्वोत्तम है, इसलिए इसका सदुपयोग आत्मकल्याण और धर्म साधना में करना चाहिए। उन्होंने कहा कि मनुष्य स्वयं को सबका मालिक समझता है, लेकिन मोह और कर्मबंधन उसे अपने वास्तविक स्वरूप से दूर कर देते हैं। परमात्मा बनने का मार्ग अपने कर्मों को सुधारने से ही प्रशस्त होता है। उन्होंने कहा कि संसार में मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र और सबसे बड़ा शत्रु उसके अपने कर्म ही हैं। इसलिए प्रत्येक कार्य करने से पहले उसके परिणामों पर अवश्य विचार करना चाहिए। मुनिश्री ने माता-पिता और गुरु के प्रति सत्यनिष्ठ रहने का संदेश देते हुए कहा कि उनके सामने कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए। यदि कोई भूल हो जाए तो उसे स्वीकार कर क्षमा मांगनी चाहिए। उन्होंने कहा कि

धर्म केवल स्वयं तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि नई पीढ़ी को भी मंदिर, संस्कार और धर्म से जोड़ना चाहिए, तभी धर्म की प्रभावना निरंतर बढ़ेगी। इस अवसर पर सामाजिक संसद एवं चातुर्मास समिति के अध्यक्ष आनंद गोधा ने बताया कि राष्ट्रसंत मुनि पुंगव श्री सुधासागर महाराज के व्यक्तित्व पर आधारित 'सुधा का सागर' पुस्तक पर आधारित लिखित परीक्षा रविवार, 9 अगस्त को वर्णी श्री गंभीरसागर महाराज के निर्देशन में आयोजित होगी। प्रतियोगिता को विभिन्न आयु वर्गों में विभाजित किया गया है तथा विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री दिगम्बर जैन जावरा वाला मंदिर, पलासिया महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की महापूजा, चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन हुआ। पूर्व संध्या पर इंदौर के जिला एवं सत्र न्यायाधीश कुलदीप जैन ने मुनिश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर उनका सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम का संचालन सोनाली जैन एवं मुक्ता जैन ने किया, जबकि शांतिधारा विवेक जैन, मुकेश जैन एवं देवेंद्र जैन परिवार द्वारा संपन्न कराई गई।

दिगंबर जैन महासमिति के 40 सदस्यीय दल की गोलाकोट तीर्थयात्रा निर्विघ्न संपन्न

श्रद्धालुओं ने अनेक पावन तीर्थों के दर्शन कर प्राप्त किया धर्मलाभ

जयपुर. शाबाश इंडिया। दिगंबर जैन महासमिति के लगभग 40 सदस्यीय तीर्थयात्री दल ने 4 अगस्त को प्रातः 6:00 बजे जयपुर से गोलाकोट तीर्थयात्रा के लिए प्रस्थान किया। तीन दिवसीय यह धार्मिक यात्रा सफलतापूर्वक एवं निर्विघ्न संपन्न हुई। यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं ने मुरैना, ग्वालियर, खनियाधाना, गोलाकोट, झांसी, करगुवा, ललितपुर तथा श्री सोनागिरजी सहित अनेक पावन तीर्थस्थलों के दर्शन कर धर्मलाभ अर्जित किया। सभी यात्रियों ने श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साह के साथ दर्शन, पूजन एवं वंदना कर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया। महासमिति की महासचिव सुनीता गंगवाल ने बताया कि 6 अगस्त को दोपहर 3:00 बजे सभी यात्री ग्वालियर रेलवे स्टेशन से जयपुर के लिए रवाना हुए। यात्रा के सफल समापन पर सभी सदस्यों ने यात्रा संयोजक एवं दिगंबर जैन महासमिति महिलांचल, राजस्थान की अध्यक्ष श्रीमती शकुंतला बिंदायका के कुशल नेतृत्व, उत्कृष्ट संगठन एवं सुव्यवस्थित व्यवस्थाओं की मुक्तकंठ से सराहना की। यात्रा में दिगंबर जैन महासमिति टोंक संभाग के उपाध्यक्ष नवीन जैन, महिलांचल निवाई की अध्यक्ष श्रीमती शशि जैन, कल्याण नगर इकाई की अध्यक्ष श्रीमती अंजलि जैन तथा मुरलीपुरा इकाई की मंत्री निशा जैन की गरिमामयी उपस्थिति रही। सभी ने यात्रा को सफल एवं प्रेरणादायी बनाने में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया। यात्रा के दौरान भोजन, आवास, आवागमन एवं अन्य सभी व्यवस्थाएं सुव्यवस्थित एवं अनुशासित रहीं, जिससे प्रत्येक यात्री ने पूरे उत्साह के साथ यात्रा का आनंद लिया। यात्रा के समापन पर सभी सदस्यों ने श्रीमती शकुंतला बिंदायका के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनके समर्पण, सेवा-भाव एवं नेतृत्व की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

सफलता एक दिन में नहीं मिलती, दृढ़ संकल्प हो तो मंजिल अवश्य मिलती है: आचार्य सुन्दर सागर महाराज

जलदाय मंत्री कन्हैयालाल चौधरी ने चातुर्मास स्थल पहुंचकर लिया आशीर्वाद

निवाई. शाबाश इंडिया। उपखंड मुख्यालय स्थित कृषि मंडी के सामने श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में आचार्य सुन्दर सागर महाराज 22 पिच्छिकाओं के साथ चातुर्मास साधना कर रहे हैं। गुरुवार को आयोजित धर्मसभा में आचार्यश्री ने कहा कि सफलता एक दिन में नहीं मिलती, लेकिन यदि दृढ़ संकल्प कर लिया जाए तो एक दिन अवश्य मिलती है। उन्होंने आत्मविश्वास, पुरुषार्थ और निरंतर प्रयास को सफलता का मूल मंत्र बताते हुए धर्ममय जीवन अपनाने का आह्वान किया। अखिल भारतीय जैन धर्म प्रचारक विमल पाटनी ने बताया कि इस अवसर पर जलदाय मंत्री कन्हैयालाल चौधरी, निवाई विधायक रामसहाय वर्मा सहित अनेक जनप्रतिनिधियों एवं समाजजनों ने श्रीफल अर्पित कर आचार्यश्री से आशीर्वाद लिया। अतिथियों ने वर्षायोग के अंतर्गत आयोजित होने वाले धार्मिक कार्यक्रमों पर भी चर्चा की। धर्मसभा में मुनि श्रुतांश सागर महाराज ने कहा कि संस्कृति से ही श्रेष्ठ संस्कारों का निर्माण होता है और अच्छे संस्कार व्यक्ति के जीवन को ऊंचाइयों तक पहुंचाते हैं। वहीं आर्यिका सुलक्ष्यमति माताजी ने कहा कि मनुष्य का उत्थान और पतन उसके कर्मों के साथ-साथ उसकी सद्भावनाओं एवं दुर्भावनाओं पर भी निर्भर करता है। उन्होंने कहा कि कषाय और दुर्भावनाएं अंततः दुख का कारण बनती हैं, इसलिए सदैव शुभ भावों के साथ जीवन जीना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन वंशिका दीदी एवं प्रिया दीदी ने किया, जबकि मंगलाचरण विमल पाटनी जौला एवं सुनील भाणजा ने प्रस्तुत किया।

राग-द्वेष में अंधा व्यक्ति अनर्थ करता है, लक्ष्य पर दृष्टि रखेंगे तो जीवन सार्थक बनेगा: पट्टाचार्य विशुद्धसागर महाराज

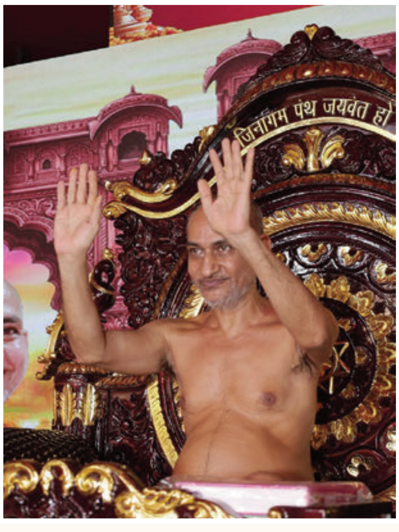

नईदिल्ली. शाबाश इंडिया। ऋषभोदय तीर्थ, कड़कड़डूमा में विराजित दिगम्बर जैन पट्टाचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि राग और द्वेष मनुष्य स्वयं करता है। राग-द्वेष से अंधा हुआ व्यक्ति हमेशा अनर्थ की ओर बढ़ता है। यदि अनर्थ से बचना है तो जीवन के वास्तविक लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करना होगा। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता, शक्ति और ज्ञान का सदुपयोग करना चाहिए। इन्हें नकारात्मक सोच या बुरे कार्यों में लगाने के बजाय समाज और राष्ट्र के निर्माण में लगाना चाहिए। जीवन का प्रत्येक क्षण अमूल्य है, इसलिए अपनी ऊर्जा को रचनात्मक कार्यों में लगाना ही श्रेष्ठ है। पट्टाचार्यश्री ने कहा कि आय से अधिक व्यय कभी नहीं करना चाहिए। धन का सदुपयोग मानव सेवा, प्राण रक्षा और लोककल्याण के कार्यों में होना चाहिए। संयमित जीवन अपनाने वाला व्यक्ति अनेक प्रकार की परेशानियों से बचा रहता है। उन्होंने कहा कि श्रेष्ठ शिष्य वही है, जो विनयवान, स्थिरचित्त, ज्ञान-पिपासु, विवेकी, आज्ञाकारी, नैतिक एवं पाप से भय रखने वाला हो तथा गुरु और परंपरा के सम्मान को सदैव बनाए रखे। वहीं सच्चा गुरु वही है, जो ज्ञानी, क्षमाशील, परिग्रह-शून्य, धर्मनिष्ठ, तपस्वी, स्वाध्यायशील, ध्यानशील एवं शिष्य के उत्कर्ष के प्रति समर्पित हो। उन्होंने कहा कि ''जो तोड़े नहीं, बल्कि जोड़े, वही सच्चा योगी और सच्चा गुरु होता है।'' धर्मसभा के दौरान 'वस्तुत्व महाकाव्य' के ऑडियो संस्करण का भी विधिवत विमोचन किया गया।

सच्चे मन से जिनवाणी का श्रवण करने से जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति होती है : आचार्य पुलकसागर महाराज

सूर्यमहल में दिया धर्म संदेश, चित्रकूटधाम में 15 से 30 अगस्त तक होगा सर्व समाज का ज्ञान गंगा महोत्सव

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, मेन सेक्टर शास्त्रीनगर के तत्वावधान में सकल दिगम्बर जैन समाज द्वारा आयोजित चातुर्मास के अंतर्गत राष्ट्रसंत मनोज्ञाचार्य पुलकसागर महाराज ससंघ के सानिध्य में सूर्यमहल में धर्म साधना निरंतर जारी है। गुरुवार को धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि सच्चे मन से जिनवाणी का श्रवण करने वाला व्यक्ति जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। उन्होंने कहा कि मनुष्य जीवन अत्यंत दुर्लभ और अमूल्य है। इसका उपयोग आत्मकल्याण एवं सिद्धत्व की प्राप्ति के लिए करना चाहिए। जीवन में कषाय कम होने से भावों में विशुद्धि आती है, जो चरित्र को ऊंचा उठाकर आत्मतत्व की ओर अग्रसर करती है। जिनवाणी के माध्यम से भगवान महावीर की वीतराग वाणी का श्रवण कर भव्य जीव भगवान बनने की दिशा में आगे बढ़ सकता है। आचार्यश्री ने कहा कि यदि मनुष्य अपने भीतर भगवान को विराजमान करना चाहता है, तो उसे मन को कषाय, असत्य, माया और अभिमान से मुक्त करना होगा। भावों की निर्मलता, वाणी की मधुरता, समता और समरसता ही आत्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त करती है। उन्होंने वर्तमान जीवन को सुधारने तथा साधु-संतों के प्रति श्रद्धा और अनुराग बढ़ाने का भी संदेश दिया। श्री पुलकसागर चातुर्मास समिति के अध्यक्ष प्रवीण चौधरी ने बताया कि कार्यक्रम के प्रारंभ में दीप प्रज्वलन, पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट का सौभाग्य बालचंद, सत्यप्रकाश एवं लक्ष्य ठोला परिवार (कांस्या, बिजौलिया) को प्राप्त हुआ। धर्मसभा में भीलवाड़ा के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहीं। समिति के संयोजक मनीष शाह ने बताया कि 14 अगस्त तक प्रतिदिन सुबह 8:30 से 10:00 बजे तक प्रवचन तथा शाम 7:00 से 8:00 बजे तक आनंद यात्रा एवं आरती का आयोजन किया जा रहा है। वहीं, सह संयोजक लोकेश अजमेरा ने बताया कि चातुर्मास का प्रमुख आकर्षण 'ज्ञान गंगा महोत्सव' 15 से 30 अगस्त तक चित्रकूटधाम में आयोजित होगा। इस महोत्सव में प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु आचार्यश्री के प्रवचनों का श्रवण करेंगे तथा देश-प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से श्रद्धालुओं के भीलवाड़ा पहुंचने की संभावना है।

युगपुरुष गणेश प्रसाद वर्णी की जीवन स्मृतियों पर आधारित 'युगदृष्टा' स्मारिका का विमोचन

देशभर के चातुर्मास स्थलों पर हुआ विमोचन, वर्णीजी ने स्थापित किए 100 से अधिक शिक्षण संस्थान

सागर. शाबाश इंडिया

युगपुरुष गणेश प्रसाद वर्णी की जीवन स्मृतियों पर आधारित 'युगदृष्टा' स्मारिका का विमोचन वर्णी विकास सभा एवं जनकल्याण समिति, सागर के तत्वावधान में देशभर में चातुर्मास कर रहे मुनि एवं आर्यिका संघों के मंगल सान्निध्य में विभिन्न स्थानों पर किया गया। कार्यक्रम में बताया गया कि गणेश प्रसाद वर्णी ने देशभर में 100 से अधिक विद्यालय एवं महाविद्यालयों की स्थापना कर शिक्षा और धर्म प्रचार में ऐतिहासिक योगदान दिया। सागर स्थित श्री दिगम्बर जैन संस्कृत महाविद्यालय भी उनके द्वारा स्थापित प्रमुख संस्थानों में शामिल है। वाराणसी, साढ़ूमल, ललितपुर, मड़ावरा, बरुआसागर, द्रोणगिरि, ईसरी (झारखंड) सहित अनेक स्थानों पर उनके द्वारा स्थापित संस्थान आज भी धर्म एवं शिक्षा की प्रभावना कर रहे हैं। उनकी जन्मस्थली हंसेरा (मड़ावरा, उत्तर प्रदेश) में वर्णी विकास सभा द्वारा निर्मित स्मारक में नियमित रूप से बाल संस्कार पाठशाला संचालित हो रही है। सागर में स्मारिका का विमोचन आचार्य

विभवसागर महाराज, निर्यापक मुनि अभयसागर महाराज, मुनि पदमसागर महाराज एवं मुनि शाश्वतसागर महाराज के मंगल सान्निध्य में संपन्न हुआ। उल्लेखनीय है कि आचार्य सुनीलसागर महाराज एवं आचार्य विभवसागर महाराज भी वर्णीजी द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थी रहे हैं। स्मारिका का संयोजन चंद्रेश शास्त्री (भोपाल) तथा प्रकाशन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष त्रिलोक शास्त्री (बड़ागांव, बागपत) के निर्देशन में हुआ। राष्ट्रीय अध्यक्ष पं. जयंत जैन शास्त्री ने कहा कि यह स्मारिका वर्णीजी के शिक्षा, संस्कार और धर्म क्षेत्र में किए गए अतुलनीय योगदान का जीवंत दस्तावेज है। राष्ट्रीय महामंत्री कैलाश जैन टीला ने बताया कि स्मारिका देशभर के चातुर्मास स्थलों पर मुनि-आर्यिका संघों तक पहुंचाई जा रही है। कार्यक्रम में अनेक विद्वानों एवं समाजसेवियों ने वर्णीजी से जुड़े संस्मरण साझा किए। अंत में सुरेश शास्त्री परसोरिया ने स्मारिका प्राप्त होने की खुशी में 15 अगस्त को वर्णी बाल संस्कार केंद्र के विद्यार्थियों को मिष्ठान वितरण कराने की घोषणा की।

विश्व स्तनपान सप्ताह : स्वस्थ भविष्य की पहली नींव

(1–7 अगस्त : विश्व स्तनपान सप्ताह विशेष)

लेखिका : जिज्ञासा जैन-प्रवक्ता (प्राणीशास्त्र), आदर्श पी.जी. कॉलेज, कुचामन सिटी

माँ और शिशु का संबंध संसार के सबसे पवित्र और अनमोल रिश्तों में से एक है। इस रिश्ते की सबसे सुंदर और स्वाभाविक शुरुआत स्तनपान से होती है। माँ का दूध केवल भोजन नहीं, बल्कि नवजात शिशु के लिए प्रकृति का अमृत है, जो उसे संपूर्ण पोषण, रोगों से सुरक्षा तथा स्वस्थ जीवन की मजबूत नींव प्रदान करता है। इसी महत्व को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 1 से 7 अगस्त तक विश्व स्तनपान सप्ताह (World Breastfeeding Week) मनाया जाता है।आज विज्ञान ने अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी माँ के दूध का कोई पूर्ण विकल्प उपलब्ध नहीं है। माँ का दूध शिशु की आयु और आवश्यकताओं के अनुसार स्वयं परिवर्तित होता रहता है। इसमें मौजूद प्रोटीन, वसा, विटामिन, खनिज, एंजाइम तथा प्रतिरक्षी (एंटीबॉडी) शिशु को संपूर्ण पोषण देने के साथ-साथ संक्रमणों से लड़ने की क्षमता भी प्रदान करते हैं।प्रसव के तुरंत बाद निकलने वाला गाढ़ा पीला दूध, जिसे कोलोस्ट्रम (Colostrum) कहा जाता है, शिशु का पहला प्राकृतिक टीका माना जाता है। दुर्भाग्यवश आज भी कई स्थानों पर अज्ञानता एवं पारंपरिक भ्रांतियों के कारण इसे फेंक दिया जाता है, जबकि यही अमूल्य दूध नवजात की रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) एवं यूनिसेफ (UNICEF) की सलाह है कि जन्म के पहले घंटे के भीतर स्तनपान अवश्य शुरू किया जाए तथा पहले छह महीने तक शिशु को केवल माँ का दूध ही दिया जाए। इस अवधि में पानी, शहद, घुट्टी अथवा अन्य किसी खाद्य पदार्थ की आवश्यकता नहीं होती। छह महीने बाद पौष्टिक पूरक आहार के साथ दो वर्ष या उससे अधिक समय तक स्तनपान जारी रखना शिशु के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास के लिए अत्यंत लाभकारी माना गया है।स्तनपान के लाभ केवल शिशु तक सीमित नहीं हैं। इससे माँ के शरीर को प्रसव के बाद सामान्य होने में सहायता मिलती है, अत्यधिक रक्तस्राव का जोखिम कम होता है तथा लंबे समय में स्तन और अंडाशय के कुछ प्रकार के कैंसर की आशंका भी कम हो सकती है। साथ ही, माँ और शिशु के बीच भावनात्मक जुड़ाव और स्नेह का संबंध भी अधिक सुदृढ़ होता है।वर्तमान समय में कामकाजी महिलाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। ऐसे में परिवार, समाज और कार्यस्थलों की जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। मातृत्व अवकाश, स्तनपान के लिए अनुकूल वातावरण तथा परिवार का

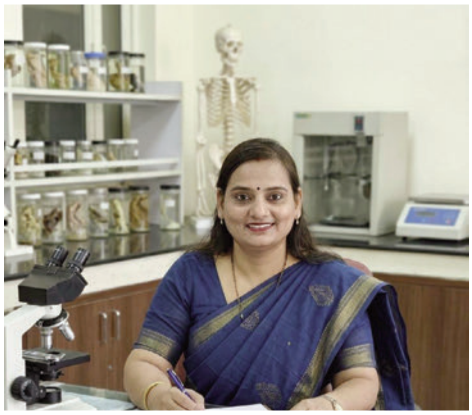

सहयोग सफल स्तनपान के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। किसी भी माँ को स्तनपान कराने में संकोच या असहजता महसूस नहीं होनी चाहिए। यह न केवल माँ का अधिकार है, बल्कि प्रत्येक शिशु का भी अधिकार है। स्तनपान से जुड़े महत्वपूर्ण संदेशजन्म के पहले घंटे में स्तनपान अवश्य शुरू करें। कोलोस्ट्रम (पहला पीला दूध) कभी न फेंकें। पहले छह महीने तक शिशु को केवल माँ का दूध ही दें। छह महीने बाद पौष्टिक पूरक आहार के साथ स्तनपान जारी रखें। स्तनपान में किसी प्रकार की कठिनाई होने पर चिकित्सक या स्तनपान विशेषज्ञ से सलाह अवश्य लें। विश्व स्तनपान सप्ताह हमें यह संदेश देता है कि स्वस्थ राष्ट्र की शुरुआत स्वस्थ शिशु से होती है और स्वस्थ शिशु की पहली आवश्यकता माँ का दूध है। आइए, इस अवसर पर हम सभी यह संकल्प लें कि प्रत्येक माँ को स्तनपान के लिए सम्मान, सहयोग और सही जानकारी उपलब्ध कराएँ। यही आने वाली पीढ़ियों के बेहतर स्वास्थ्य और सशक्त भारत की सबसे मजबूत नींव होगी।

100 वर्ष प्राचीन श्री दिगम्बर जैन 13 पंथी कोठी के भव्य नवीन प्रवेश द्वार का लोकार्पण

ईशरी बाजार/गिरिडीह (झारखंड)। लगभग 100 वर्ष प्राचीन एवं ऐतिहासिक श्री दिगम्बर जैन 13 पंथी कोठी में श्रद्धा, संस्कृति और अध्यात्म का नया अध्याय जुड़ गया है। कोठी के मुख्य प्रवेश द्वार पर निर्मित भव्य, कलात्मक एवं आकर्षक नवीन प्रवेश द्वार का विधिवत शुभ लोकार्पण किया गया। बलुआ पत्थर (सैंडस्टोन) एवं सुवर्णमयी धातु से निर्मित यह नक्काशीदार प्रवेश द्वार उत्कृष्ट शिल्पकला का अद्वितीय उदाहरण है। साथ ही यह सकल जैन समाज की अटूट आस्था, समृद्ध परंपरा और आध्यात्मिक श्रद्धा का भव्य प्रतीक भी है। इस कलात्मक द्वार का निर्माण भावी पीढ़ियों के लिए धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित और संरक्षित रखने की दिशा में एक प्रेरणादायी एवं ऐतिहासिक पहल माना जा रहा है। श्री बंगाल-बिहार-ओडिशा दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमिटी, कोलकाता के अंतर्गत संचालित इस ऐतिहासिक कोठी के पदाधिकारियों एवं प्रबंध समिति ने नवीन प्रवेश द्वार के लोकार्पण पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसे समाज के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि बताया। कमिटी एवं प्रबंध समिति ने समस्त जैन समाज एवं धमार्नुरागियों से आग्रह किया है कि वे ईशरी बाजार स्थित श्री दिगम्बर जैन 13 पंथी कोठी में पधारकर जिनेन्द्र भगवान के श्रीचरणों में भक्तिभाव से वंदन करें तथा इस दिव्य, अलौकिक एवं आध्यात्मिक वातावरण का पुण्य लाभ प्राप्त करें।

चित्रकूट कॉलोनी में 35 दिवसीय नमोकार विधान का धार्मिक उल्लास के साथ आयोजन

मंदिर में आकर धर्म साधना करने से ही जैन संस्कृति और संस्कार सुरक्षित रहेंगे : आचार्य विशदसागर महाराज

जयपुर. शाबाश इंडिया। सांगानेर स्थित चित्रकूट कॉलोनी में क्षमा मूर्ति आचार्य श्री विशदसागर महाराज ससंघ के सानिध्य में 35 दिवसीय नमोकार विधान श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ आयोजित किया जा रहा है। विधान के अंतर्गत 6 अगस्त 2026 को आगरा से पधारे एक श्रद्धालु को सौधर्म इंद्र बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने आचार्यश्री का पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट का पुण्य लाभ भी प्राप्त किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य विशदसागर महाराज ने कहा कि धर्म का वास्तविक पालन घर में नहीं, बल्कि मंदिर में आकर करना चाहिए। मंदिर में की गई धर्म साधना से पापों की निर्जरा होती है और पुण्य का संचय होता है। उन्होंने कहा कि चातुर्मास का उद्देश्य केवल साधु-संतों का आगमन नहीं, बल्कि उनके प्रवचनों का श्रवण, सेवा और धर्म साधना के माध्यम से जीवन को सार्थक बनाना है। आचार्यश्री ने कहा कि यदि युवा पीढ़ी धर्म से जुड़ेगी, तभी जैन संस्कृति और संस्कार सुरक्षित रहेंगे। उन्होंने श्रद्धालुओं से भावपूर्वक मंदिर में आकर पूजा, भजन और ध्यान करने का आह्वान करते हुए कहा कि घर पर धर्म साधना केवल वे लोग करें, जो वृद्धावस्था या अस्वस्थता के कारण मंदिर नहीं आ सकते। धर्मसभा में मूलचंद पाटनी, दीपक पहाड़िया, अनिल काशीपुरा, पदम अजमेरा, विकास जैन, सुमित जैन, कमल छाबड़ा सहित आगरा से पधारे श्रद्धालुओं एवं चित्रकूट जैन समाज, सांगानेर के अनेक धर्मप्रेमी उपस्थित रहे।

कर्म से डरो, कर्म किसी के भी मीत नहीं होते: मुनि पुंगव श्री सुधासागर महाराज

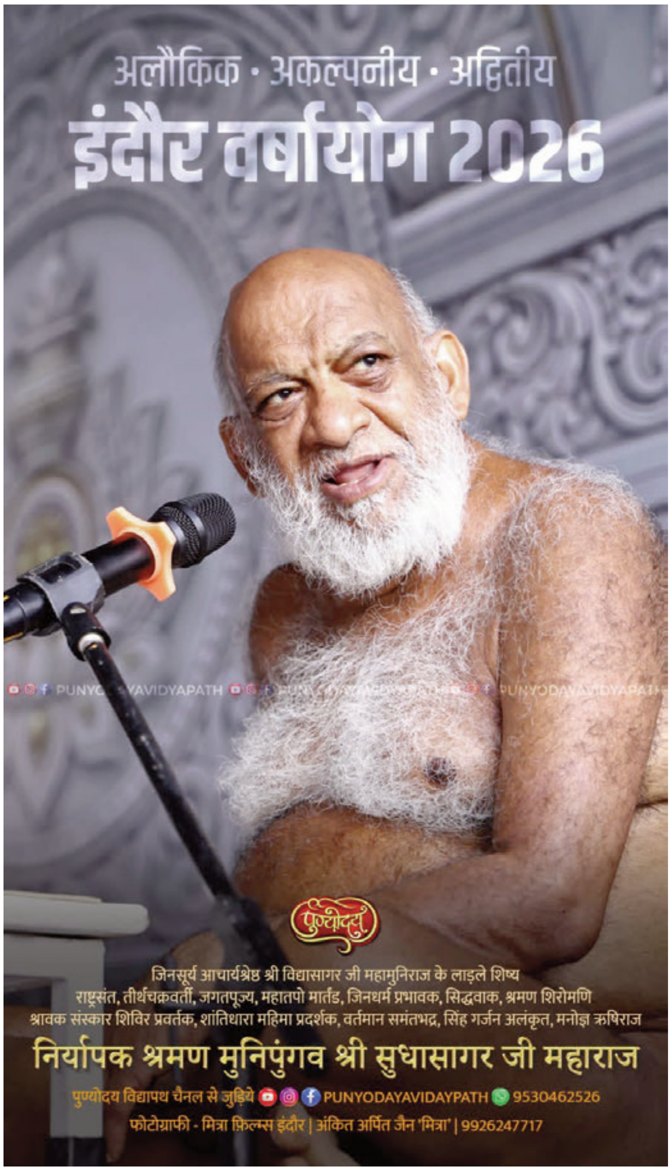

इंदौर. शाबाश इंडिया। श्रमण संस्कृति के महाश्रमण मुनि पुंगव श्री सुधासागर महाराज ने गुरुवार को देशना मंडप में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि संसार में सबसे बलवान यदि कोई है तो वह कर्म है। कर्म न किसी का मित्र होता है और न ही किसी पर दया करता है। इसलिए मनुष्य को भगवान या गुरु से नहीं, बल्कि अपने कर्मों से डरना चाहिए। उन्होंने कहा कि पूर्व जन्म के कर्मों के कारण ही भगवान आदिनाथ को 7 माह 7 दिन तक आहार की विधि प्राप्त नहीं हुई थी। कर्मों का प्रभाव इतना प्रबल होता है कि उनसे कोई भी बच नहीं सकता। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को सद्कर्मों का मार्ग अपनाना चाहिए। मुनिश्री ने कहा कि भारतीय संस्कृति में नारी केवल पत्नी बनने के लिए नहीं, बल्कि मातृत्व के माध्यम से परिवार और संस्कारों की परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए विवाह करती है।

जिस प्रकार वंश और संपत्ति के संरक्षण के लिए उत्तराधिकारी आवश्यक होता है, उसी प्रकार धर्म की निरंतरता बनाए रखने के लिए भी संस्कारवान पीढ़ी का होना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि माता-पिता का दायित्व है कि वे अपनी संतानों को ऐसे धार्मिक संस्कार दें, जिससे उनके बाद भी परिवार में धर्म जीवित रहे। यदि प्रत्येक परिवार यह नियम बना ले कि घर का हर सदस्य देवदर्शन के बाद ही भोजन करेगा, तो धर्म और संस्कार पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित रहेंगे। राजेश जैन ददू ने बताया कि धर्मसभा का संचालन अनुराग जैन ने किया। इस अवसर पर आकाश कोल, प्रिंसिपल टोंग्या, सपना मनीष गोधा, आनंद, नवीन गोधा, भूपेंद्र जैन, अखिलेश सोधिया, मुक्ता जैन, सोनाली बगड़िया सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित थे।

संस्कार शिविर से शिक्षा, ज्ञान और संस्कार मिलते हैं, इन्हीं से जीवन का निर्माण होता है : आचार्य वर्धमान सागर महाराज

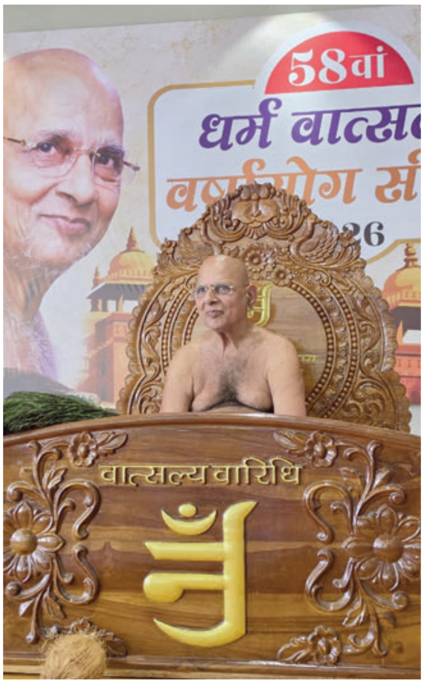

सीकर. शाबाश इंडिया। वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाधीश आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज 36 साधुओं के साथ 58वें वर्षायोग हेतु सीकर में विराजमान हैं। उनके सानिध्य में आचार्य वर्धमान सागर धर्म वात्सल्य वषायोग चातुर्मास समिति, श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर बीसपंथ आम्नाय प्रबंध समिति एवं सकल दिगम्बर जैन समाज के सहयोग से 9 अगस्त से 9 सितंबर 2026 तक रत्नकरण्ड श्रावकाचार शिक्षण शिविर का आयोजन किया जाएगा। डॉ. राजेश पंचोलिया ने बताया कि शिविर में वयस्क वर्ग के लिए प्रातः एवं दोपहर में रत्नकरण्ड श्रावकाचार की कक्षाएं आयोजित होंगी, जबकि बच्चों के लिए बालबोध प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय भाग की कक्षाएं प्रतिदिन शाम 6 से 7 बजे तक संचालित की जाएंगी। शिविर के लिए आशीर्वचन देते हुए आचार्य वर्धमान सागर महाराज ने कहा कि धार्मिक शिविर बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण की सशक्त पाठशाला हैं। शिक्षा, ज्ञान और संस्कार ही उज्ज्वल भविष्य की नींव रखते हैं। उन्होंने कहा कि लौकिक शिक्षा के साथ धार्मिक संस्कार भी आवश्यक हैं। बच्चों को देवदर्शन, पानी छानकर पीना, रात्रि भोजन का त्याग, सप्त व्यसनों से दूर रहना तथा अष्टमूल गुणों का पालन करना चाहिए। इन संस्कारों से जीवन में उन्नति, समाज में प्रतिष्ठा और जिनशासन की प्रभावना होती है। इस अवसर पर मुनि श्री मुमुक्षु सागर महाराज ने कर्म सिद्धांत की व्याख्या करते हुए कहा कि मनुष्य को अपने कर्मों के अनुसार ही सुख-दुःख, पुण्य और पाप का फल प्राप्त होता है। संसार में प्रत्येक व्यक्ति अकेला आता है और अकेला ही जाता है। कर्म किसी के साथ पक्षपात नहीं करते, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को आत्मस्वरूप और अपने भावों की शुद्धि पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

5 से 6 फीट ऊंचे 100 पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

श्री दिगम्बर जैन महिला महासमिति अजमेर संभाग की अनूठी पहल

अजमेर. शाबाश इंडिया। श्री दिगम्बर जैन महिला महासमिति, अजमेर संभाग की ओर से पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से अजमेर जिले के ग्राम नरवर स्थित एकमात्र राजकीय चिकित्सालय परिसर में 5 से 6 फीट ऊंचे 100 पौधों का रोपण किया गया। इस अवसर पर आमजन से अपने-अपने क्षेत्र को हरा-भरा बनाने और पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया गया। समिति की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी ने बताया कि यह पौधरोपण अभियान श्री दिगम्बर जैन महासमिति, अजमेर संभाग के अध्यक्ष अतुल पाटनी, संरक्षक राकेश पालीवाल के सहयोग तथा उपाध्यक्ष ताराचंद सेठी के संयोजन में आयोजित किया गया। अभियान को सफल बनाने में गौड़विल स्कूल के प्रशासक एवं राजकीय चिकित्सालय के स्टाफ का भी महत्वपूर्ण सहयोग रहा। अस्पताल परिसर में सुरक्षित एवं उपयुक्त स्थानों पर जामुन, अमरूद, चीकू, बेल, आम, केरी, सप्तपर्णी तथा मीठा नीम सहित विभिन्न प्रजातियों के 100 पौधे लगाए गए। समिति पदाधिकारियों ने इन पौधों के संरक्षण एवं नियमित देखभाल का भी संकल्प लिया। इस अवसर पर राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष मधु पाटनी, मंत्री सुषमा पाटनी, कोषाध्यक्ष रेणु पाटनी, अतुल पाटनी, ताराचंद सेठी सहित अनेक पर्यावरण प्रेमी एवं समाजजन उपस्थित रहे।

संयम से समृद्ध हुआ जिनशासन, आचार्य आनंद ऋषिजी और मालवकेसरी सौभाग्यमुनिजी जैसी विभूतियां इसकी अमूल्य धरोहर : युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी

गुरुआनंद जन्मोत्सव के तहत धर्मसभा में संयम, गुरु-निष्ठा और स्वाध्याय का दिया संदेश

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

गुरुआनंद जन्मोत्सव के नवदिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत शांतिभवन में आयोजित विशाल धर्मसभा में श्रमण संघीय युवाचार्य महेन्द्र ऋषिजी ने कहा कि जिनशासन का परम सौभाग्य है कि उसे आचार्य आनंद ऋषिजी महाराज और मालवकेसरी सौभाग्यमुनिजी महाराज जैसी युगप्रभावी विभूतियां मिलीं। इन महापुरुषों का व्यक्तित्व संयोग नहीं, बल्कि संयम, स्वाध्याय, गुरु-निष्ठा और कठोर साधना का परिणाम था। उनका जीवन आज भी संघ, समाज और नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का अक्षय स्रोत है। युवाचार्यश्री ने आचार्य आनंद ऋषिजी महाराज के जीवन प्रसंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि बाल्यावस्था से ही उनकी ज्ञान-पिपासा, अनुशासन और अध्ययनशीलता ने उन्हें महान आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित किया। उन्होंने कहा कि ज्ञान केवल कंठस्थ करने से नहीं, बल्कि निरंतर मनन, अभ्यास और जीवन में उतारने से सार्थक होता है। गुरु रत्न ऋषिजी महाराज ने उनके भीतर छिपी प्रतिभा को पहचानकर उन्हें श्रेष्ठ शिक्षा एवं संस्कार प्रदान किए। उन्होंने कहा कि आचार्य आनंद ऋषिजी का संपूर्ण जीवन गुरु-भक्ति, स्वाध्याय और आत्मपुरुषार्थ का आदर्श उदाहरण है। वहीं मालवकेसरी सौभाग्यमुनिजी महाराज ने वात्सल्य, संगठन, विनम्रता और साधर्मिक समर्पण के माध्यम से जिनशासन को नई ऊर्जा प्रदान की। उनका जीवन यह संदेश देता है कि वास्तविक नेतृत्व अधिकार से नहीं, बल्कि सेवा, समर्पण और आत्मीय व्यवहार से स्थापित होता है। सभा से पूर्व साध्वी चिंतनश्रीजी ने कहा कि परिस्थितियां नहीं, बल्कि मनःस्थिति का परिवर्तन ही जीवन की दिशा बदलता है और आत्मपरिवर्तन से ही वास्तविक आनंद की प्राप्ति होती है।

सुबोध पब्लिक स्कूल में सिनर्जी इंटरैक्ट क्लब का गठन एवं पदस्थापना समारोह आयोजित

रोटरी क्लब जयपुर बापू नगर के सहयोग से विद्यार्थियों ने लिया सेवा और नेतृत्व का संकल्प

जयपुर. शाबाश इंडिया

सुबोध पब्लिक स्कूल में 6 अगस्त 2026 को रोटरी क्लब जयपुर बापू नगर (डिस्ट्रिक्ट 3056) के सहयोग से सिनर्जी इंटरैक्ट क्लब के गठन एवं पदस्थापना समारोह का गरिमापूर्ण आयोजन किया गया। समारोह में रोटरी के पदाधिकारियों, विद्यालय प्रबंधन, प्रधानाचार्या श्रीमती आशी श्रीवास्तव, शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं विशिष्ट अतिथियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन एवं णमोकार मंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ हुआ। स्वागत उद्बोधन में प्रधानाचार्या आशी श्रीवास्तव ने कहा कि विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, सेवा-भाव और सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित करने के लिए सिनर्जी इंटरैक्ट क्लब एक सशक्त मंच सिद्ध होगा। उन्होंने रोटरी के आदर्श वाक्य ''स्वयं से पहले सेवा'' को जीवन में अपनाने का आह्वान किया। विद्यालय परिवार ने सभी अतिथियों का ग्रीन गोल्ड पौधे एवं स्मृति-चिह्न भेंट कर स्वागत किया। क्लब की समन्वयक सुश्री प्रतिभा भगवानी ने क्लब के उद्देश्य एवं कार्ययोजना पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह मंच विद्यार्थियों को जिम्मेदार, संवेदनशील और दूरदर्शी नेतृत्वकर्ता बनने का अवसर प्रदान करेगा। समारोह का मुख्य आकर्षण क्लब के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव एवं कार्यकारिणी सदस्यों का विधिवत पदस्थापन रहा। रोटरी पदाधिकारियों ने नव-निर्वाचित पदाधिकारियों को बैज पहनाकर पदभार ग्रहण कराया। सभी पदाधिकारियों ने नेतृत्व, सत्यनिष्ठा, सौहार्द एवं निःस्वार्थ सेवा के मूल्यों का पालन करने की शपथ ली। इस अवसर पर रोटेरियन इंजीनियर पी.सी. सांघी ने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण एवं सामुदायिक सेवा के कार्यों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया, जबकि डिस्ट्रिक्ट गवर्नर सुश्री मीता माथुर ने अपने प्रेरक उद्बोधन से विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम के अंत में क्लब के नव-निर्वाचित अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष ने समाज सेवा, जनकल्याण और सहयोगात्मक परियोजनाओं के माध्यम से सकारात्मक परिवर्तन लाने का संकल्प व्यक्त किया।

जीवन में घृणा नहीं, क्षमा को धारण करें : आर्यिका विष्णुप्रभा माताजी

कमला नेहरू नगर की धर्मसभा में दिया समता, विनय और मधुर व्यवहार का संदेश

जयपुर. शाबाश इंडिया। कमला नेहरू नगर में चातुर्मासरत दिगम्बर जैन आर्यिका श्री 105 विष्णुप्रभा माताजी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन में घृणा नहीं, बल्कि क्षमा को धारण करना चाहिए। क्षमा, विनय और समता ही मनुष्य को आत्मिक शांति प्रदान करते हैं। सामाजिक कार्यकर्ता जय कुमार जैन बड़जात्या ने बताया कि प्रतिदिन प्रातः आर्यिका श्री विष्णुप्रभा माताजी के प्रवचन आयोजित हो रहे हैं, जिनमें बड़ी संख्या में जैन समाज के साथ अन्य समाज के लोग भी उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त कर रहे हैं। आर्यिका श्री ने कहा कि जब जीवन में तनाव बढ़ जाता है तो व्यक्ति की मानसिक शांति और नींद दोनों प्रभावित होती हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने मन में द्वेष और घृणा के स्थान पर क्षमा का भाव रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि बड़ों के प्रति सदैव विनय और छोटों के प्रति वात्सल्य का व्यवहार करना चाहिए। यदि मौन से कार्य हो जाए तो मौन रहना श्रेष्ठ है और यदि बोलना आवश्यक हो तो केवल हितकारी, मर्यादित एवं मधुर वचन ही बोलने चाहिए। संघस्थ बाल ब्रह्मचारिणी शैली दीदी ने बताया कि आर्यिका श्री ने कहा कि यदि संसार में वास्तविक सुख होता तो तीर्थंकर भगवान संसार का त्याग नहीं करते। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति बाहर से मजबूत दिखाई देता है, वह भी भीतर अनेक संघर्षों से जूझ रहा होता है। इसलिए विपरीत परिस्थितियों में भी मुस्कुराकर जीवन जीने वाला ही सच्चा श्रावक कहलाता है। उन्होंने कहा कि जितना अधिक मनुष्य विनम्र और विनयशील होगा, उसके जीवन में उतनी ही समता और शांति का विकास होगा।

जैन मंदिर मोक्षमार्ग, आध्यात्मिक शांति, अहिंसा और समवशरण का प्रतीक है : आर्यिका सुबोधमति माताजी

फागी के पार्श्वनाथ चैत्यालय में धर्मसभा, श्रद्धालुओं को दिए आत्मशुद्धि के संदेश

फागी. शाबाश इंडिया। कस्बे के श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में विराजित आर्यिका श्रुतमति माताजी एवं आर्यिका सुबोधमति माताजी ससंघ के सानिध्य में धर्म प्रभावना के विविध कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। गुरुवार को आयोजित धर्मसभा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सहभागिता कर धर्मलाभ प्राप्त किया। राजस्थान जैन महासभा, फागी शाखा के महामंत्री राजाबाबू गोधा ने बताया कि कार्यक्रम की शुरूआत भगवान का अभिषेक, शांतिधारा एवं अष्टद्रव्यों से पूजन-अर्चन के साथ हुई। श्रद्धालुओं ने सुख, शांति एवं समृद्धि की कामना करते हुए भक्तिभाव से पूजा-अर्चना की। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आर्यिका सुबोधमति माताजी ने कहा कि जैन मंदिर मोक्षमार्ग, आध्यात्मिक शांति, अहिंसा और समवशरण (समोशरण) का प्रतीक है। जिस प्रकार समवशरण में तीर्थंकर भगवान का दिव्य उपदेश सभी जीवों के लिए समान रूप से उपलब्ध होता है, उसी प्रकार जिनप्रतिमाएं भी श्रद्धालुओं को शांति, अहिंसा और वीतरागता का संदेश देती हैं। उन्होंने कहा कि मंदिर में प्रवेश करते ही व्यक्ति के भावों में सकारात्मक परिवर्तन आता है तथा क्रोध, लोभ और मोह जैसे विकार कम होने लगते हैं। मंदिर आत्मशुद्धि और आत्मकल्याण का सर्वोत्तम माध्यम है। धर्मसभा के दौरान आर्यिका श्री ने धार्मिक प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन किया, जिसमें सही उत्तर देने वाले श्रद्धालुओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। चातुर्मास समिति के पारस नला एवं कमलेश मंडावरा ने बताया कि कार्यक्रम में महावीर कठमाना, अग्रवाल समाज के अध्यक्ष महावीर झंडा, महावीर प्रसाद-मंजू गोधा (जौबनेर), पं. कैलाश कड़ीला, पं. संतोष बजाज, महेंद्र बावड़ी, पारस मित्तल, धर्मचंद पीपलू, त्रिलोक पीपलू, रमेश कागला, राजेश छाबड़ा, पवन कागला, सुरेंद्र पंसारी, रमेश बावड़ी, विनोद नला, मितेश लदाना, कमलेश चौधरी, राजाबाबू गोधा सहित बड़ी संख्या में महिला मंडल एवं श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

काव्य रस की सरिता संग मानवता का संदेश, 'सुखन का आशिया' की गोष्ठी में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त को दी स्वरांजलि

कांकेर की 7 वर्षीय आदिवासी बालिका 'चांदनी' की शिक्षा के लिए 10,500 रुपए की सहयोग राशि भेंट

बाड़मेर. शाबाश इंडिया

साहित्य और सामाजिक सरोकारों के सुंदर संगम का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए 'सुखन का आशिया' संस्था के तत्वावधान में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की जयंती पर राष्ट्रीय ऑनलाइन साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में देशभर के साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रकवि को स्वरांजलि अर्पित की। गोष्ठी की सबसे प्रेरणादायी पहल छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले के ग्राम चरभट्टी की 7 वर्षीय आदिवासी बालिका चांदनी की शिक्षा के लिए 10,500 रुपए की सहयोग राशि एकत्रित कर 3 अगस्त को उसके परिवार को भेंट करना रही। इस मानवीय प्रयास की प्रतिभागियों ने मुक्तकंठ से सराहना की। कार्यक्रम की अध्यक्षता ममता साहू (कांकेर, छत्तीसगढ़) ने की, जबकि नरेंद्र सिंह (बिहार) मुख्य अतिथि रहे। कार्यक्रम का संचालन केविन चौहान (बाड़मेर) ने किया। शुभारंभ नरेंद्र सिंह की सरस्वती वंदना तथा साधना शाही एवं सुनील कुमार खुराना के स्वागत गीतों से हुआ। इस अवसर पर कवयित्री साधना शाही का जन्मदिन भी उत्साहपूर्वक मनाया गया। काव्य पाठ सत्र में कृष्ण कुमार चंद्रा के गीत, केविन चौहान एवं डॉ. संजीदा खानम शाहीन की गजलें तथा मेघा अग्रवाल के मुक्तकों ने श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। इसके अलावा कृष्णा जोशी, सुरभि शुक्ला, गरिमा लखनवी, सावित्री नेताम, काजल वर्मा और रमेश चंद्रा ने भी अपनी उत्कृष्ट रचनाओं का पाठ किया। अध्यक्ष ममता साहू ने सभी रचनाओं की संतुलित एवं सारगर्भित समीक्षा प्रस्तुत की। अंत में डॉ. संजीदा खानम शाहीन एवं सुरभि शुक्ला ने धन्यवाद ज्ञापित किया। देशभर से जुड़े साहित्यकारों, भामाशाहों एवं प्रबुद्धजनों की सहभागिता के साथ यह प्रेरणादायी गोष्ठी सफलतापूर्वक संपन्न हुई।

क्रोध विवेक को नष्ट कर देता है, आत्मकल्याण के लिए कषायों पर विजय आवश्यक : मुनि विजयेश सागर महाराज

आर.के. कम्युनिटी सेंटर में धर्मसभा, पार्श्वनाथ मोक्ष कल्याणक पर उपाध्याय पद प्रदान करने की घोषणा

जयपुर. शाबाश इंडिया। आर.के. कम्युनिटी सेंटर में आयोजित धर्मसभा श्रद्धा एवं भक्ति के वातावरण में संपन्न हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य 108 श्री वर्धमान सागर महाराज, 108 श्री विराग सागर महाराज एवं 108 श्री विशुद्ध सागर महाराज के चित्रों के अनावरण तथा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर आचार्य 108 श्री विहर्षसागर महाराज का पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट भी की गई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि 108 श्री विजयेश सागर महाराज ने कहा कि क्रोध आने पर मनुष्य का विवेक समाप्त हो जाता है और वह अनर्थ की ओर बढ़ जाता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर मौजूद क्रोध, मान, माया और लोभ जैसे कषायों को पहचानकर उन पर नियंत्रण करना चाहिए। उन्होंने गौतम स्वामी का प्रसंग सुनाते हुए कहा कि अपमान और कटु वचनों को स्वीकार नहीं करने वाला व्यक्ति सदैव शांत और स्थिर रहता है। यदि हमारे परिणाम शुद्ध हो जाएं तो आत्मा शुक्ल लेश्या की ओर अग्रसर होती है। मुनिश्री ने कहा कि मनुष्य को अपने कर्मों के प्रति सदैव सजग रहना चाहिए, क्योंकि शुभ और अशुभ कर्म ही भविष्य की गति निर्धारित करते हैं। इसलिए वर्तमान जीवन में सद्कर्म और संयम को अपनाना आवश्यक है। धर्मसभा का संचालन कमल बैद ने किया। अभिषेक एवं शांतिधारा का सौभाग्य श्रीमती तारादेवी, निर्मलकुमार, नरेश एवं नरेंद्र झांझरी परिवार (दादिया वाले) को प्राप्त हुआ। इस अवसर पर घोषणा की गई कि श्री पार्श्वनाथ भगवान के मोक्ष कल्याणक महोत्सव पर आचार्य 108 श्री विहर्षसागर महाराज अपने परम प्रभावक शिष्य मुनि 108 श्री विजयेश सागर महाराज को विधिवत संस्कारों के साथ उपाध्याय पद प्रदान करेंगे।

विभा ज्ञानगंगा में उमड़ रहा श्रद्धालुओं का सैलाब

तत्त्वार्थ सूत्र एवं भक्तामर स्तोत्र की नियमित कक्षाओं से श्रद्धालु कर रहे ज्ञानार्जन

जयपुर। मानसरोवर स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर, वरुण पथ में परम पूज्य गणिनी आर्यिका श्री 105 विभाश्री माताजी ससंघ के पावन सानिध्य में प्रतिदिन धर्म एवं अध्यात्म की 'विभा ज्ञानगंगा' प्रवाहित हो रही है। ज्ञानार्जन के इस पावन अभियान में प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु, मातृशक्ति, युवा एवं बच्चे उत्साहपूर्वक भाग लेकर धर्मलाभ प्राप्त कर रहे हैं। प्रचार संयोजक जिनेश कुमार जैन ने बताया कि यह ज्ञानयज्ञ समाज में धर्म, संस्कार और आत्मजागरण का सशक्त माध्यम बन रहा है। अध्ययन को अधिक प्रेरणादायी बनाने के उद्देश्य से मंदिर समिति ने प्रत्येक अध्याय की पूर्णता के बाद परीक्षा आयोजित करने का निर्णय लिया है। प्रतिदिन प्रातः 8:00 से 9:00 बजे तक तत्त्वार्थ सूत्र तथा 9:00 से 10:00 बजे तक भक्तामर स्तोत्र की नियमित कक्षाएं संचालित की जा रही हैं, जिनमें धर्म के गूढ़ सिद्धांतों का सरल एवं प्रेरक ढंग से अध्ययन कराया जा रहा है। मंदिर समिति के अध्यक्ष जे.के. जैन एवं उपाध्यक्ष लोकेश सोगानी ने जयपुर जैन समाज के सभी श्रद्धालुओं से अधिक से अधिक संख्या में सहभागिता करने का आह्वान करते हुए कहा कि ऐसे दुर्लभ आध्यात्मिक अवसर बार-बार प्राप्त नहीं होते। प्रत्येक परिवार को इन कक्षाओं से जुड़कर अपने जीवन को ज्ञान, संयम और संस्कारों से आलोकित करना चाहिए। संगठन मंत्री सुनील गंगवाल एवं उप संगठन मंत्री राजेन्द्र सोनी ने बताया कि तत्त्वार्थ सूत्र के प्रत्येक अध्याय की समाप्ति पर लगभग 100 प्रश्नों की परीक्षा आयोजित होगी, जिसमें वस्तुनिष्ठ एवं लघु उत्तरीय प्रश्न शामिल रहेंगे। प्रत्येक अध्याय में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को मंदिर समिति द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जाएगा।

विदेशी शिक्षा में अध्यात्म का अभाव

भारतीय शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण भी है : मुनि श्रमण सागर महाराज

राघौगढ़. शाबाश इंडिया। धर्मनगरी राघौगढ़ में ससंघ चातुर्मास कर रहे महान तपस्वी एवं बुंदेली महाकवि मुनि श्रमण सागर महाराज ने 'श्रमण धारा' प्रवचनमाला में शिक्षा और अध्यात्म विषय पर प्रवचन देते हुए कहा कि वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल धन कमाना बनकर रह गया है,

जबकि भारतीय शिक्षा पद्धति का लक्ष्य ज्ञान, नैतिकता, चरित्र निर्माण और अध्यात्म सहित जीवन के समग्र विकास से जुड़ा है। उन्होंने कहा कि भारतीय शिक्षा ज्ञानार्जन, जीवन जीने की कला, जीविकोपार्जन, नैतिकता, चरित्र निर्माण और अध्यात्म–इन छह उद्देश्यों की पूर्ति करती है। दूध से घी बनने की प्रक्रिया का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि विदेशी शिक्षा मक्खन तक सीमित है, जबकि भारतीय शिक्षा अध्यात्म रूपी घी तक पहुंचाती है। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी को लौकिक शिक्षा के साथ आध्यात्मिक शिक्षा देना भी आवश्यक है, तभी भारतीय संस्कृति और संस्कार सुरक्षित रहेंगे। इस अवसर पर बताया गया कि 9 अगस्त को आचार्य विद्यासागर भवन में दोपहर 1 बजे से मुनि श्रमण सागर महाराज एवं मुनि ओंकार सागर महाराज के चातुर्मास मंगल कलश स्थापना समारोह का आयोजन होगा। कार्यक्रम में इंदौर से प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्रह्मचारी तरुण भैया विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। जैन समाज ने श्रद्धालुओं से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित रहने का आह्वान किया।

पट्टाचार्य पद प्रतिष्ठा महोत्सव में शामिल होंगे स्वामी रामदेव और आचार्य बालकृष्ण

पुष्पगिरी तीर्थ ट्रस्ट ने पतंजलि योगपीठ में सौंपा निमंत्रण, 15-16 अगस्त को पुष्पगिरी आने की दी सहमति

हरिद्वार/देवास/छत्रपति संभाजीनगर। 15 अगस्त को पुष्पगिरी तीर्थ में आयोजित होने वाले अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्नसागरजी महाराज के पट्टाचार्य पद प्रतिष्ठा महोत्सव को लेकर देशभर के संत-महात्माओं से आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं प्राप्त करने का क्रम जारी है। राष्ट्रसंत गणाचार्य श्री 108 पुष्पदन्तसागरजी महाराज के निर्देश एवं उनके हस्तलिखित आशीर्वाद पत्र के साथ पुष्पगिरी तीर्थ ट्रस्ट का प्रतिनिधिमंडल विभिन्न संतों से भेंट कर समारोह का निमंत्रण दे रहा है। इसी क्रम में प्रतिनिधिमंडल हरिद्वार स्थित पतंजलि योगपीठ पहुंचा, जहां योगगुरु स्वामी रामदेव एवं आचार्य बालकृष्ण से आत्मीय भेंट कर उन्हें महोत्सव का आमंत्रण दिया गया। दोनों संतों ने निमंत्रण सहर्ष स्वीकार करते हुए 15 एवं 16 अगस्त को पुष्पगिरी तीर्थ में आयोजित समारोह में शामिल होने की स्वीकृति प्रदान की तथा महोत्सव की सफलता के लिए शुभकामनाएं दीं। इससे पूर्व प्रतिनिधिमंडल ने आचार्य पुलकसागर महाराज (भीलवाड़ा), आचार्य प्रज्ञासागर महाराज (जयपुर), आचार्य अरुणसागर महाराज (दिल्ली) एवं आचार्य सौरभसागर महाराज (मेरठ) से भी आशीर्वाद प्राप्त किया। सभी संतों ने समारोह की अनुमोदना करते हुए मंगल संदेश प्रदान किए। पतंजलि योगपीठ में भेंट के दौरान आचार्य बालकृष्ण का जन्मोत्सव भी सादगी एवं आत्मीयता के साथ मनाया गया। पुष्पगिरी तीर्थ ट्रस्ट एवं अंतर्मना गुरुभक्त परिवार की ओर से उन्हें शुभकामनाएं दी गईं। इस अवसर पर छत्रपति संभाजीनगर से श्री खंडेलवाल दिगम्बर जैन पंचायत के अध्यक्ष महावीर पाटनी ने वीडियो कॉल के माध्यम से जन्मदिन की बधाई दी। प्रतिनिधिमंडल में एस.के. गुप्ता (फास्टिंग फाउंडेशन), मनोज चौधरी, संदीप जैन (कानपुर), ट्रस्ट के उपाध्यक्ष अशोक अजमेरा (फरीदाबाद), सचिव सुभाष जैन, ट्रस्टी महावीर गंगवाल, मनोज सोगानी (जयपुर), गजराजजी, गौरव जैन तथा पुष्पगिरी तीर्थ ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रकाश अजमेरा सहित अनेक गुरुभक्त उपस्थित रहे।

पदमपुरा जैन मंदिर के शिखर कलश पर मयूर विराजमान

जयपुर. शाबाश इंडिया

हिन्दू मंदिर के शिखर की ध्वजा पर मोर का बैठना अत्यंत शुभ, मंगलकारी और देवीय कृपा का प्रतीक माना जाता है। मोर को भगवान कार्तिकेय का वाहन, श्री कृष्ण का मुकुट श्रृंगार और मां लक्ष्मी का स्वरूप (धैर्य, सुंदरता व पवित्रता) माना गया है।

धार्मिक और आध्यात्मिक संकेत

देवीय आशीर्वाद: मंदिर के ध्वज पर मोर का बैठना इस बात का सूचक है कि वहां सकारात्मक और पवित्र ऊर्जा का पूर्ण प्रभाव है।

शुभ सूचना: इसे क्षेत्र में सुख, शांति, समृद्धि और वर्षा (अच्छी फसल) की आगमन माना जाता है।

दोष निवारण: मोर विषैले जीवों (जैसे सांप) को नष्ट करता है, अतः इसका उच्च स्थान पर बैठना नकारात्मक शक्तियों और बाधाओं के दूर होने का प्रतीक है।

प्रेषक : राजकुमार कोठारी वास्तु शास्त्री

विचारों की पवित्रता से ही इंसान भगवान बनता है : आचार्य विशुद्धसागर महाराज

धर्मसभा में अनुशासन, आत्मचिंतन और धर्ममय जीवन अपनाने का दिया संदेश

नई दिल्ली (ऋषभ विहार)। ऋषभ विहार में विराजमान दिगम्बर जैनाचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि मनुष्य का भविष्य उसके विचारों से निर्मित होता है। विचार ही मनुष्य को ऊंचाइयों तक पहुंचाते हैं और विचार ही पतन का कारण बनते हैं। इसलिए यदि जीवन और आचरण को पवित्र बनाना है तो सबसे पहले विचारों को पवित्र बनाना होगा। ''विचारों से ही इंसान भगवान बनता है और विचारों से ही हैवान।'' आचार्यश्री ने कहा कि आज के विचार ही भविष्य का निर्माण करते हैं। जो व्यक्ति अपने विचारों को सकारात्मक, सात्विक और संयमित रखता है, वही सुख, समृद्धि और सफलता का अधिकारी बनता है। उन्होंने कहा कि धन से नहीं, बल्कि धर्म से जीवन धन्य होता है। यदि आत्मशांति, आत्मसुख और आत्मानंद प्राप्त करना है तो मनुष्य को धन-संपत्ति से मोह हटाकर अपनी आत्मा पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस संसार का कोई कर्ता या विनाशक नहीं है। प्रत्येक जीव अपने कर्मों के अनुसार ही सुख-दुःख का फल प्राप्त करता है। मनुष्य के भाव ही उसके भविष्य का निर्माण करते हैं, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने भावों और कर्मों को शुद्ध रखने का प्रयास करना चाहिए। आचार्य विशुद्धसागर महाराज ने अनुशासन को सफलता और श्रेष्ठ जीवन की आधारशिला बताते हुए कहा कि आत्मानुशासन मनुष्य को महान बनाता है। अनुशासन ही सफलता का मंत्र, श्रेष्ठता की पहचान और आनंद का द्वार है। विशेष रूप से विद्यार्थियों के लिए अनुशासन को उन्होंने जीवन का सबसे बड़ा वरदान बताया। धर्मसभा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त किया। यह जानकारी आचार्यश्री के परम भक्त वैभव जैन (बड़ामलहरा) ने दी।